SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

प्रकृति के सुकुमार कवि : सुमित्रानंदन पंत के काव्य की विशेषताएँ

नीतू यादव, शोधार्थी, हिंदी विभाग
ओ.पी. जे.एस. यूनिवर्सिटी, चूरू, राजस्थान, भारत
नवनीता भाटिया, (Ph.D.), हिंदी विभाग
ओ.पी. जे.एस. यूनिवर्सिटी, चूरू, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
नीतू यादव, शोधार्थी, हिंदी विभाग
ओ.पी. जे.एस. यूनिवर्सिटी, चूरू, राजस्थान, भारत
नवनीता भाटिया, (Ph.D.), हिंदी विभाग
ओ.पी. जे.एस. यूनिवर्सिटी, चूरू, राजस्थान, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 19/03/2022
Revised on : -----
Accepted on : 26/03/2022
Plagiarism : 00% on 19/03/2022

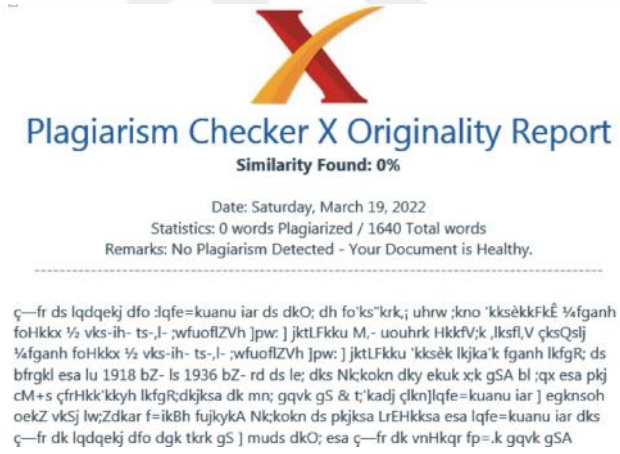
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Saturday, March 19, 2022
Statistics: 0 words Plagiarized / 1640 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

ç—fr ds lqdqekj dfo :lqfe=kuanu iar ds dkO; dh fo'ks"krk,; uhrw ;kno 'kksèkkFkÊ ¼fganh foHkkx ½ vks-ih- ts-,l- ;wfuoflZVh]pw:] jktLFkku M,- uouhrk HkkfV;k ,lksfl,V çksQslj ¼fganh foHkkx ½ vks-ih- ts-,l- ;wfuoflZVh]pw:] jktLFkku 'kksèk lkjka'k fganh lkfgR; ds bfrgkl esa lu 1918 bZ- ls 1936 bZ- rd ds le; dks Nk;kokn dky ekuk x;k gSA bl ;qx esa pkj cM+s çfrHkk'kkyh lkfgR;dkjksa dk mn; gqvk gS & t;'kadj çlkn]lqfe=kuanu iar] egknsoh oekZ vkSj lw;Zdkar f=ikBh fujkykA Nk;kokn ds pkjksa LrEHkksa esa lqfe=kuanu iar dks ç—fr dk lqdqekj dfo dgk tkrk gS] muds dkO; esa ç—fr dk vnHkqr fp=.k gqvk gSA

शोध सार

हिंदी साहित्य के इतिहास में सन् 1918 ई. से 1936 ई. तक के समय को छायावाद काल माना गया है। इस युग में चार बड़े प्रतिभाशाली साहित्यकारों का उदय हुआ है – जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला। छायावाद के चारों स्तम्भों में सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। उनके काव्य में प्रकृति का अदभुत चित्रण हुआ है। छायावाद युग को हिंदी कविता के 'प्रकृति चित्रण' के काव्य का स्वर्ण युग कह सकते है। पंत जी ने प्रकृति का वर्णन जिस रूप में किया है, वह पाठको के लिए वरदान स्वरुप है। पंत जी ने प्रकृति का 'मानवीकरण' इस प्रकार किया है कि उन्होंने अपने जीवन की सम्पूर्ण भावनाओं को कवि कर्म के प्रति समर्पित कर दिया।

मुख्य शब्द

प्रकृति, काव्य, साहित्य।

आधुनिक हिंदी कविता में छायावाद का काव्य कविता का सर्वोच्च प्रकृति काव्य है। हमें यह भी स्वीकार करना चाहिए कि छायावादी प्रकृति – काव्य को सर्वोच्च बनाने का श्रेय सुमित्रानंदन पंत जी को है। पंत जी छायावाद के चार स्तम्भों में से एक स्तम्भ माने जाते है। पंत जी का प्रकृति के प्रति विशेष अनुराग रहा है। छायावाद युग के सभी कवियों ने प्रकृति की गोद में क्रीड़ा की है। जयशंकर प्रसाद की कविता में छायावाद के सर्वप्रथम लक्षण देखे जाने के कारण उन्हें छायावाद का प्रवर्तक माना गया है। प्रसाद जी का प्रकृति परक काव्य भी मनोहारी है, जो पाठको को अपनी और खींच लेता है। लेकिन पंत जी को 'प्रकृति के सुकुमार कवि' की उपाधि देने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उन्होंने

प्रकृति को काफी नज़दीक से देखने का प्रयास किया है। सुमित्रानंदन पंत जी प्रकृति के एक कुशल कवि एवं कलाकार है। पंत जी की प्रकृतिपरक कविताओं के अध्ययन से पाठक के मन को भी प्रकृति की गोद में लाकर रख देती है। पंत का प्रकृति बोध केवल रूप–रंग की सीमाओं को अतिक्रमण करते हुए प्रकृति बोध का सूक्ष्मतर गंध–साधना तक गया था। पंत जी केवल कल्पना एवं भावनाओ के कवि है, अपनी कोमल कल्पना के बल पर ही उन्होंने प्रकृति को ऐसा रूप प्रदान किया, जैसे कि वह हमारे सामने चलने–फिरने लगता है।

छायावाद की वृहदत्रयी में प्रसाद, निराला ,और पंत जी की गणना की जाती है। कविवर पंत का जन्म 1900 ईसवीं में उत्तरांचल के जिला अल्मोड़ा के कौसानी ग्राम में हुआ था। जन्म के कुछ घंटे बाद ही मातृस्नेह से वंचित हो जाने के कारण अल्मोड़ा की प्राकृतिक सुषमा ने इन्हे बचपन से ही अपनी ओर आकृष्ट किया और प्रकृति के उस मनोरम वातावरण का इनके व्यक्तित्व पर गंभीर प्रभाव पड़ा। पंत में यथार्थ के विषम और दारुण रूप के अभाव का कारण भी कुछ सीमा तक प्रकृति के उस प्रभाव को माना जा सकता है। इनके मन में प्रकृति के प्रति इतना मोह पैदा हो गया था कि ये जीवन की नैसर्गिक व्यापकता और अनेक रूपता में पूर्ण रूप से आसक्त न हो सकेः

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले, तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?
छोड़ अभी से इस जग को।

इन पंक्तियों के सामान्य रूप से यह प्रतीत होता है कि कवि रमणी के सौंदर्य की अपेक्षा प्रकृति के सौंदर्य को अधिक महत्वपूर्ण मानता है।

पंत जी ने स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुए लिखा है – 'कविता की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है, जिसका श्रेय मेरी जन्म भूमि कुर्मांचलप्रदेश को है। प्रकृति के साहचर्य ने जहाँ एक ओर मुझे सौंदर्य, स्वप्न और कल्पना जीवी बनाया है, वहाँ दूसरी ओर जनभीरु भी बना दिया।' पंत के वैयक्तिक जीवन पर कितना भी अंतर आया हो परन्तु प्रकृति का साथ उन्होंने नहीं छोड़ा। प्रकृति कवि के लिए एक ओर माँ है, तो साथ ही सुकोमल प्रेयसी भी। पंत माँ के नैसर्गिक सुख से वंचित रहे, अतः उन्होंने इस सुख की क्षतिपूर्ति प्रकृति से की हैः

माँ मेरे जीवन की हार,
तेरा उज्जवल हृदयहार हो अश्रुकणों का यह उपहार (वीणा)

प्रकृति पंत के काव्य का क्षणिक तत्व नहीं है, बल्कि एक स्थायी अंग है। प्रकृति वस्तुतः पंत के लिए एक कोमल कल्पना है। उनके द्वारा किया गया प्रकृति का मानवीकरण वस्तुतः अप्रतिम है। प्रकृति पंत की सहचरी है रुग्णा जीवन बाला के रूप में प्रकृति का यह अध्ययन दृष्टव्य हैः

जग के दुःख दैन्य शयन पर, वह रुग्णा जीवन बाला।
रे कब से जाग रही वह आँसू, नीरव की माला।

पंत जी के प्रकृति चित्रण की एक विशेषता यह भी है, कि उन्हें प्रकृति के कोमल एवं सुकुमार रूप ने ही अधिक मोहित किया है। प्रकृति के सुन्दर रूप ने पंत जी को अधिक लुभाया है। पंत जी के काव्य में प्रकृति के सभी रूप उपलब्ध होते है।

पंत बादलो को वर्णमय नेत्रों से देखते है और मुग्ध होकर अपनी अनुभूति प्रकट करते हुए कहते हैः:

गहरे धुँधले धुले साँवले,
मेघों से भरे मेरे नयन।

'मानव' नामक कविता में जीवन सौंदर्य की नूतन भावना का उदय कवि अपने मन में इस प्रकार चाहता हैः

मेरे मन के मधुवन में सुषमा के शिशु! मुस्काओ।
नव–नव साँसों का सौरभ नव मुख का सुख बन जाओ।

पंत जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैः– वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्य, स्वर्ण किरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, योगपथ, चिदंबरा, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन आदि।

पंत का प्रकृति के साथ चित्रण अभूतपूर्व दृष्टिगोचर होता है। मानव कविता में कवि पंत ने प्रकृति के सौंदर्य का दर्शन समग्र जीवन के रूप में करते हैः

सुन्दर है विहग सुमन सुन्दर,
मानव! तुम सबसे सुंदरतम।

उनकी कविताओं में प्रकृति साकार उठी सी प्रतीत होने लगती है जैसेः

सिखा दो ना हे मधुप कुमार,
मुझे भी अपने मीठे गान।
कुसुम के चुने कटोरों से
करा दो ना कुछ–कुछ मधुपान।

सुमित्रा नंदन पंत के काव्य की प्रमुख विशेषता प्रकृति चित्रण रहा है। उन्होंने प्रकृति के मानवीकरण रूप का प्रयोग किया है। इसके साथ–साथ उनके काव्य में आत्माभिव्यंजना, सौंदर्याचित्रण, श्रृंगार–निरूपण, नारी भावना, रहस्य भावना, दुःख और वेदना की विवृति तथा प्रतीकात्मक शैली भी दृष्टिगोचर होती है।

पंत जी ने काव्य की विषय–वस्तु को अपने व्यक्तिगत जीवन से ही खोजने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने जीवन के निजी प्रसंगो, घटनाओ एवं व्यक्तिगत भावनाओं को काव्य की विषय वस्तु बनाया है। उनकी कविता में व्यैक्तिक दुःख–सुख की खुलकर अभिव्यक्ति हुई है। पंत कृत 'उच्छ्वास' नामक कविता इस कथन के समर्थन में पेश की जा सकती है। पंत ने अपनी 'प्रिया' को मन मंदिर में बसाकर उसे पूजने का उल्लेख निम्न पंक्तियों में किया हैः

विधुर उर के मृदु भावों से तुम्हारा कर नित नव श्रृंगार।
पूजता हूँ मैं तुम्हे कुमारि मूंद दुहरे दृग द्वार।

पंत के काव्य में प्रेम और श्रृंगार भावना की बड़ी सहज अभिव्यक्ति हुई है, प्रिया का आकर्षण मन को पागल कर देता हैः

''तुम में जो लावण्य मधुरिमा जो असीम सम्मोहन
तुम पर प्राण निछावर करने पागल हो उठता मन
नहीं जानती क्या निज बल तुम, निज अपार आकर्षण''

कविवर पंत ने भी वियोग व्यथा का मार्मिक वर्णन अपनी कविताओं में किया है। वे तो यह मानते है कि कविता का जन्म ही वियोगी व्यथा से हुआ होगा। उस प्रेमी की आहों ने ही कविता का रूप धारण कर लिया होगाः

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान।

छायावाद काव्य में रहस्वाद की प्रवृति प्रमुख रूप से उपलब्ध होती है। प्रायः सभी छायावादी कवियो ने अज्ञात सत्ता के प्रति 'जिज्ञासा' के भाव व्यक्त किए है। पंत की 'मौन निमंत्रण' कविता में इसकी अभिव्यक्ति बहुत सुन्दर ढंग से हुई हैः

''न जाने कौन आए धुतिमान,
जान मुझको अबोध अज्ञान।
सुझाते हो तुम पथ अनजान,

फूंक देते छिद्रों में गान।''

पंत जी ने प्रकृति पर मानवीय चेतना का आरोप करते हुए उसमे हंसते–रोते हुए भी दिखाया हैः

''अचिरता देख जगत की आप,
शून्य भरता समीर निश्वास।
डालता पातो पर चुपचाप
ओस के आंसू नीलाकाश''

पंत जी के काव्य में दुख और वेदना भाव की अभिव्यक्ति भी हुई है। उन्होंने 'परिवर्तन' कविता में यह स्वीकार किया है कि संसार में दुख की अधिकता है, यहाँ शांति जीवन पर्यन्त प्राप्त नहीं हो सकतीः

''यहाँ सुख सरसों शोक सुमेरु,
अरे जग है जग का कंकाल।
वृथा रे अर अरण्य चीत्कार,
शांति सुख है उस पार।''

पंत जी शब्दों के चयन में निपुण है। अलंकारों के साथ–साथ उन्होंने अपने काव्य में उर्दू के भी शब्दों का चयन किया है। पंत जी छायावादी कवियों में प्रमुख स्थान रखते है। इस प्रकार हम कह सकते है कि पंत जी की काव्य यात्रा अनवरत जारी है। उनकी रचनाओं में विविधता पाई जाती है। हरिवंशराय बच्चन जी ने पंत जी के सन्दर्भ में कहा है कि ''जब सदियाँ बीत जाएँगी और हिंदी हिन्द की एकता की भाषा होगी, तब यह सहज स्पष्ट होगा कि राष्ट्रभाषा का यह कवि सचमुच उस राष्ट्र का जन चारण था।'' अंततः यह कहा जा सकता है कि प्रकृति और मानव सदा से ही एक दूसरे के पूरक है। इनके एक सहज संबंध है क्योंकि प्रकृति मनुष्यों को वे सब संसाधन देती है, जो उनके जीवन का आधार है।

निष्कर्ष

वर्तमान साहित्य में छायावादी दौर का भले ही अवसान हो चुका है, किन्तु उसके समृद्धशाली और गौरवशाली दौर को कभी नहीं भुलाया और झुठलाया जा सकता है। जब हिंदी कविता चलने का अभ्यास या इस प्रकार कहें कि चलना सीख रही थी, तब सुमित्रानंदन पंत ने हिंदी कविता को न केवल सौम्य, सुकुमार और सशक्त भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के साथ–साथ हिंदी साहित्य के लिए एक नई शैली भी प्रदान की है। उन्होंने आजीवन अविवाहित रहकर साहित्य की सेवा की है।

सन्दर्भ सूची

1. *नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास* पृ. 535।
2. तिवारी, अशोक. *हिंदी साहित्य का इतिहास,* पृ. 213।
3. तिवारी, अशोक. *हिंदी साहित्य का इतिहास,* पृ. 214।
4. तिवारी, अशोक. *हिंदी साहित्य का इतिहास,* पृ. 215।
5. सिंह, करनैल. हिंदी साहित्य प्रतियोगिता सीरीज, अरिहंत पब्लिकेशन।

****